विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : २ ■ सितम्बर २०२४

अशिक्षा का उपचार करती उपचारिका

अस्पताल में मरीज़ों की हालत देखकर एक नर्स जल्द ही समझ गई कि ज़्यादातर मरीज़ किसी बीमारी से नहीं, बल्कि अशिक्षा से पीड़ित हैं।

बारसूर (दंतेवाड़ा): बारसूर के सरकारी स्कूल की शिक्षिका, मधु उके, अपने स्कूल को एक आदर्श संस्थान बनाना चाहती हैं। वे उस दिन का सपना देखती हैं जब अभिभावक ये मानने लगेंगे कि सरकारी स्कूल भी निजी स्कूलों जैसा दर्जा विद्यार्थियों को दे सकते हैं। और ये सपना उन्हें आराम नहीं करने देता। वे स्कूल की आधारभूत संरचना और पढ़ाई के साधनों में सुधार के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं।

मधुजी ने अपना करियर दंतेवाड़ा के पिछड़े इलाकों में एक नर्स के रूप में शुरू किया था। अस्पताल में आनेवाले मरीज़ों की हालत देखकर वो जल्द ही समझ गई कि ज़्यादातर मरीज़ किसी बीमारी से नहीं, बल्कि अशिक्षा से पीड़ित हैं। उनके पास आनेवाली महिलाओं का एक ही इलाज था - जागरूकता। इस उम्र कि महिलाओं को समझाना भी मुश्किल था। छोटी उम्र में सही शिक्षा दी जाये तभी एक जागरूक समाज बनेगा, ये सोचकर उन्होंने नर्सींग की नौकरी से इस्तीफा दिया, और शिक्षाकर्मी का प्रशिक्षण लेकर वे नागफनी में सरकारी शिक्षक बनी।

इसी विचार से प्रेरित होकर मधुजी 14 साल से आदिवासी बच्चों और उनके परिवारों के जीवन को सुधारने का काम कर रही हैं। वे लड़कियों की शिक्षा पर खास ध्यान देती हैं, ताकि वे बड़े सपने देख सकें और उन्हें पूरे भी कर सकें। इसके अलावा, अपने नर्सिंग के हुनर से वे महिलाओं को स्वास्थ्य के बारे में लगातार जागरूक करती हैं।

उन्होंने जब नागफनी के स्कूल में काम शुरू किया तब वहाँ मुश्किल से 2-4 बच्चे आते थे। आज वह संख्या अब 250 से ऊपर है। मधु जी ने बाकी शक्षकों के साथ घर घर से बच्चों को स्कूल में तो लाया ही, पर नये नये उपक्रमों से उनके मन में शिक्षा के लिये प्रेम विकसित किया।

मधुजी पिछले तीन सालों से दो लड़कियों की शिक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी उठा रही हैं। इसके अलावा, वे ज़रूरतमंदों को कपड़े और खाना भी प्रदान कराती हैं, बिना किसी प्रचार के।

अब दो साल से वे बारसूर के स्कूल में कार्यरत हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य जागरूकता में सुधार के इस सतत प्रयास से इन आदिवासी क्षेत्रों का भविष्य उज्जवल हो रहा है इसमें संदेह नहीं। ■

कौन जीतेगा पाँच रुपये का सिलेबस सवाल?

शिक्षक प्रमोद खर्डे स्कूल में ही "कौन जीतेगा 5 रुपये का सिलेबस सवाल" नाम की यह अनोखी प्रतियोगिता आयोजित करते हैं।

पेज 4

पढ़ाई का जुगाड़

प्रधानाचार्या श्रीमती शिल्पा चव्हाण का मानना है कि बुनियादी शिक्षा न्यूनतम संसाधनों के साथ भी संभव है।

पेज 7

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के कुछ पहल

■ पूर्व सीईओ, जिला परिषद, नागपूर (अगस्त 2024 तक) ■ वर्तमान सीईओ, नागपुर स्मार्ट एंड सस्टेनेबल सिटी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन

नागपुर: श्रीमती सौम्या शर्मा चांडक, नागपुर जिला परिषद की पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (अगस्त 2024 तक), ग्रामीण स्कूलों के विद्यार्थियों का शैक्षिक के साथ समग्र विकास हो इसके लिए सतत सक्रिय रहती हैं। उनका कहना है कि इस काम में विनोबा एक गेम चेंजर साबित हुआ है।

सौम्याजी की पहल से नागपुर जिले की शालाओं के लिए कई नए उपक्रम लागू किये गए। उनके मार्गदर्शन में, और विनोबा टीम की सहायता से, हाल ही में 'लिटिल इनोवेटर प्रोग्राम' सफलतापूर्वक कार्यान्वित हुआ। इस उपक्रम का उद्देश्य है कि गांवों में सरकारी स्कूलों के बच्चों को विज्ञान, टेक्नोलॉजी की नई सोच, और प्रॉब्लम सॉल्विंग से जोड़ा जाए। उन्हें शहर के प्रतिष्ठित IIT और IIM जैसे महाविद्यालयों में जाने का, और वहाँ के प्राध्यापकों से मिलने का मौका मिले, और वो जिज्ञासा करना सीखें।

सरकारी स्कूलों में ज्यादातर बच्चे गरीब घर से हैं। उनके माता-पिता की आर्थिक मामलों में समझ भी कम होती है। इसलिए, कक्षा 5-9 के छात्रों को बुनियादी बैंकिंग, शेयर बाज़ार, इत्यादि के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से अगस्त से फरवरी तक साप्ताहिक Financial Literacy Program आयोजित किया गया। इसी तरह, महावाचन और परसबाग इत्यादि उपक्रमों से विद्यार्थियों को सक्रिय बनाने के लिए कार्यक्रम चलाए गए।

सौम्याजी के नेतृत्व में एक उल्लेखनीय उपक्रम था पठन सुधार कार्यक्रम (Reading Enhancement Program) का।

इसके अंतर्गत स्कूलों में पुस्तकालयों को कितना महत्व दिया जा रहा है इसका मूल्यांकन किया गया। विनोबा ऐप का उपयोग करके 1,426 स्कूलों की जानकारी इकट्ठा की गई। पता चला कि 1,290 स्कूलों में पुस्तकालय के लिए कोई विशेष स्थान नहीं था; 71 स्कूलों में पुस्तकालय थे पर वह दुर्लक्षित थे, उनमें पर्याप्त किताबें नहीं थीं; 51 स्कूलों में साफ सुथरे पुस्तकालय थे, पर्याप्त किताबें भी थीं; और 14 स्कूलों में एक अच्छे पुस्तकालय के साथ डिजिटल पढ़ाई की सामग्री भी थीं। इस अध्ययन के बाद जिनके पास यह सुविधा नहीं थी ऐसे 10 स्कूलों को पुस्तकालय बैग प्रदान किए गए, जिसमें प्रत्येक स्कूल को दो बैग मिले।

पठन सुधार कार्यक्रम में कुल 61 शालाओं ने पुस्तक पठन कार्यक्रम में सक्रियता दिखाई। इनमें कक्षा 1-5 की 52 शालाओं ने, और कक्षा 6-8 की 9 शालाओं ने भाग लिया। इस गतिविधि के 219 विडिओज विनोबा ऐप पर अपलोड हुए।

'कॉफी विथ सीईओ' सौम्याजी का एक अनोखा उपक्रम रहा। हफ्ते में एक बार वे सीधे छात्रों से बातचीत करती थी। "इस तरह मैं उनके नवाचारों की सराहना कर सकती हूं और उन्हें प्रोत्साहित कर सकती हूं। जब वे मुझसे सवाल पूछते हैं, तो मैं उनमें यह विश्वास पैदा कर सकती हूं कि यह सब संभव है और हासिल करने योग्य है," वह बताती हैं।

साथ ही, मुलभुत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) में सभी बच्चे कुशल हों, इसलिए पुरे जिले में महत्वपूर्ण कार्यक्रम चलाए गए। निपुण भारत अभियान के अंतर्गत शिक्षा मंत्रालय ने 2026-27 तक सभी प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN), प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

सरकारी स्कूलों के बच्चे छात्रवृत्ति या नवोदय और सैनिक विद्यालयों के प्रवेश परीक्षाओं में कमजोर पड़ते हैं, क्योंकि उनके पास पढ़ाई के पर्याप्त साधन और सही जानकारी नहीं होती। विनोबा ऐप की मदद से इन बच्चों के लिए छात्रवृत्ति सराव परीक्षा चलाकर उनके लिए उचित अवसर निर्माण किया गया।

श्रीमती सौम्या शर्मा चांडक ने शैक्षिक और जीवन कौशल (Academic and Lifeskills) दोनों पर बराबर ध्यान रखते हुए कार्यक्रम चलाये। उनका कहना है कि प्रशासन को जो नई कल्पनाएं, योजनाएं लागू करनी होती हैं, वो विनोबा के माध्यम से आसान हो जाती हैं। "हम इसमें कई कार्यक्रम पेपरलेस, यानी पूरी तरह से डिजिटल बना पाए। हम विनोबा ऐप के साथ एक साल से ज्यादा समय से काम कर रहे हैं। जिले के 99% शिक्षक और शिक्षा कर्मचारी विनोबा पर रजिस्टर्ड हैं। विनोबा प्रोग्राम के इंसेंटिव बेस्ड उपक्रम शिक्षकों को आकर्षित करते हैं, और उन्हें जोड़कर भी रखते हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में अच्छा काम करनेवाले कुछ शिक्षकों को लैपटॉप भेंट में दिये गए। ऐसी गतिविधियों से शिक्षकों का उत्साह दुगना हो जाता है।"

ओपन लिंक्स फाउंडेशन के संस्थापक संजय डालमिया कहते हैं, "श्रीमती सौम्या शर्मा चांडक टेक्नोलॉजी का बख़ूबी इस्तेमाल करती है। सरकार की विशाल प्रणाली में टेक्नोलॉजी का प्रभावी उपयोग कोई सौम्याजी से सीखे।" ■

दुर्ग : उत्कृष्ट कार्यक्रम के अंतर्गत दुर्ग जिले के कक्षा १० वी और १२ वी के 189 स्कूलों में मासिक परीक्षा आयोजित की गई। इसमें कक्षा 10 के 11,000 छात्र और कक्षा 12 के 8,418 छात्र शामिल हुए।

चंद्रपूर : विनोबा टीम ने 21 से 23 अगस्त तक जिले में विनोबा ऐप के उपयोग के लिए 15 विकास खंड (तालुका) में प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित कीं। इन तीन दिनों में, जिले के 15 ब्लॉकों के कुल 1,520 शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, क्लस्टर प्रमुखों और ब्लॉक विकास अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया।

गडचिरोली: जिला परिषद गढ़चिरोली के सभाकक्ष में 50 शिक्षकों का 'स्पोकन इंग्लिश' का प्रशिक्षण संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम विवेक नाकाडे सर (उप शिक्षा अधिकारी प्राथमिक), लता चौधरी मैडम (उप शिक्षा अधिकारी), पुनित मातकर सर (डायट-अधिव्याख्याता) की उपस्थिति में आयोजित किया गया। टीम विनोबा के विशाल डहाट, गणेश शेंडे, और चंदन रापर्तीवार ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सहयोग किया.

गरियाबंद : ओपन लिंक्स फाउंडेशन की ओर से आयोजित कार्यक्रम में जिले के 8 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ द मन्थ' पुरस्कार दिये गए। यह पुरस्कार शिक्षा विभाग के जिला मिशन समन्वयक खेल सिंह नायक के हाथों दिये गए।

अगले कार्यक्रम

धमतरी– जिले के सभी प्राथमिक विद्यालयों में कुल 37,286 छात्रों और माध्यमिक विद्यालयों में 27,440 छात्रों के साथ जुलाई माह के लिए 'मिशन अव्वल मासिक परीक्षा' सम्पन्न हुआ। कुल 1,316 में से 99% स्कूलों ने विनोबा ऐप पर कक्षावार छात्र ग्रेड अपडेट किए। इसी तरह 27 अगस्त से 'मासिक मूल्यांकन परीक्षा' भी आयोजित की गई। इस बार पहली बार हम मिशन अव्वल मासिक परीक्षा कक्षा 1-8 प्रश्न पत्र के प्रश्न पत्र को विनोबा ऐप पर प्रसारित करने जा रहे हैं। OMR आधारित प्रैक्टिस टेस्ट - 27 अगस्त से NAS, JNV और NMMSE प्रैक्टिस टेस्ट आयोजित किया गया जहां कक्षा 3, 5, 8 और 10 से लगभग 37,000 छात्रोंने भाग लिया।

दंतेवाड़ा- 'पढ़े दंतेवाड़ा लिखे दंतेवाड़ा' (FLN) कार्यक्रम के अंतर्गत हम दंतेवाड़ा जिले के सभी प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों से लगभग 32,000 विद्यार्थियों के बेसलाइन अस्सेस्मेंट की जानकारियां OMR के माध्यम से संगृहीत करने वाले है । 9 से 12 कक्षाओं के लिए मासिक मूल्यांकन परीक्षा आयोजित होगी, जिसमें लगभग 8,800 प्रतिभागी विद्यार्थियों के परिणाम विनोबा फॉर्म्स की सहायता से जिले को प्राप्त होने वाली है।

कौन जीतेगा पाँच रुपये का सिलेबस सवाल?

खर्डे सर बच्चों के लिए खुद बाल कविताएँ और पोवाडे लिखते हैं। पोवाडा, इस मराठी लोक-कला के लोकप्रिय काव्यप्रकार के द्वारा वे कठिन और उबाऊ लगनेवाले विषयों को सरल, लयबद्ध, और मजेदार तरीके से सीखाकर शब्दावली और भाषा पर विद्यार्थियों की पकड़ मजबूत करवाते हैं।

चिंचोली (बुलढाणा) : कौन जीतेगा पाँच रुपये? सुनकर किसी खेल जैसा लगता है ना? पर खेल खेल में यहाँ पर इन बच्चों के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काम हो रहा है। शिक्षा का।

चिंचोली जिला परिषद मराठी उच्च प्राथमिक शाला के 1 से 5 कक्षा के शिक्षक प्रमोद खर्डे स्कूल में वे "कौन जीतेगा 5 रुपये का सिलेबस सवाल?" नाम की यह अनोखी प्रतियोगिता आयोजित करते हैं। उनका मानना है कि इस प्रतियोगिता से बच्चों में सवाल हल करने की गति और आत्मविश्वास बढ़ता है। ऐसी कितनी ही अभिनव कल्पनाओं का प्रयोग कर के प्रमोदजी और उनके सहकारी शिक्षक बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित रहते हैं।

बच्चों की बुद्धिमत्ता को बढ़ाने के लिए, वे सवालों के अभ्यास पर जोर देते हैं। हर पाठ पढ़ाने के बाद वे बच्चों को उस पाठ से जुड़े सवालों के जवाब स्वाध्याय से लिखने के लिए प्रेरित करते हैं। चौथी कक्षा के इतिहास के किताब में छत्रपती शिवाजी महाराज की जीवनी पर कुछ पाठ हैं। छात्रों के लिए पाठ दिलचस्प बनाने हेतू उन्होंने हर पाठ में दिये गये इतिहास पर आधारित एक पोवाडा लिखा है। इस तरह से उन्होंने १८ पाठो पर आधारित १८ पोवाडे लिखे हैं। और वे हर पाठ में दिया गया इतिहास का हिस्सा

पोवाडा गाकर छात्रों को सिखाते हैं। इससे बच्चोंकी इतिहास विषय के प्रती दिलचस्पी बढी हैं।

पोवाडा, इस मराठी लोक-कला के लोकप्रिय काव्यप्रकार के द्वारा वे कठिन और उबाऊ लगनेवाले विषयों को सरल, लयबद्ध, और मजेदार तरीके से सिखाकर शब्दावली और भाषा पर विद्यार्थियों की पकड़ मजबूत करवाते हैं। खर्डे जी के मार्गदर्शन में यहाँ के बच्चे हर महीने एक मासिक पत्रिका बनाते हैं। इसमें लेख, चित्रकला, कविताएँ, आदि शामिल करते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति बढ़ती है।

"मैं खुद एक छोटे से समुदाय से आया हूँ। मुझे जो भाषा की कठिनाई का सामना करना पड़ा, वो बच्चों को न करना पड़े, इसलिए बच्चों को मैं मातृभाषा के साथ शुद्ध मराठी भी सिखाता हूँ। इससे उनकी संवाद क्षमता काफी विकसित हुई है," वे बताते हैं। प्रमोद खर्डे जैसे समर्पित शिक्षक इस प्रचलित धारणा को झुठलाते हैं की सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बिल्कुल गिरा हुआ है। इन्हें और इनके अव्याहत कार्य को ओपन लिंक्स फाउंडेशन का सलाम।

मैथ डॉक्टर

उनका शोध 'गोल्ड डिपोज़िट' (स्वर्ण भंडार) पर है। इसलिए, OLF की फील्ड टीम मानती है कि आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम की यात्रा में उन्हें सोना हाथ लगा है।

मैथ लैब -- जहां यह शिक्षिका गणित से डरने वाले छात्रों की कमजोरियों का परीक्षण करती हैं और ऐसे समाधान देती हैं, जो उन्हें गणित की समस्याओं से निपटने के लिये तैयार करें।

हनोदा (दुर्ग) : डॉ. प्रज्ञा सिंह के पास भूविज्ञान में पीएचडी है। पर वे कोई विदेशी फेलोशिप लेकर बैठी प्रोफेसर या शोधकर्ता नहीं हैं। बल्कि उससे कोसों दूर, दुर्ग जिले के शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय हनोदा में, शिक्षक हैं। पिछले 16 साल से मिडिल स्कूल के बच्चों के लिए पढ़ाई को आसान बना रही हैं।

विषयों को — खास कर गणित को — दिलचस्प और स्कोरिंग बनाने के लिए सरल तरीके विकसित करने के प्रयास में डॉ. सिंह ने 500 से अधिक टीएलएम – टीचिंग लर्निंग मटेरियल (शिक्षण-अधिगम सामग्री) तैयार किये हैं। उन्होंने छात्रों के लिए एक गणित की प्रयोगशाला (मैथ लैब) बनाई है, जहां वे विद्यार्थियों को तेजी से समस्याओं को हल करके अपने पाठ्यक्रम पर पकड़ बनाने की सरल तकनीकें सिखाती हैं।

कोई आश्चर्य की बात नहीं कि डॉ. प्रज्ञा सिंह को राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए दो बार नामांकित किया गया। उन्होंने अब तक कई अन्य सम्मान भी प्राप्त किए हैं।

गणित लैब उनकी सबसे रचनात्मक पहल है जो छात्रों को अक्सर डरानेवाले विषय गणित के करीब लाती है।

"इस लैब में मैंने मुख्य रूप से उन विषयों पर टीएलएम बनाए हैं जो मुझे बचपन में कठिन लगते थे। आज मेरे पास कक्षा 6वीं से 8वीं के छात्रों के लिए लगभग सभी गणित के विषयों के लिए टीएलएम हैं," डॉ प्रज्ञा बताती हैं।

वे एक YouTube चैनल चलाती हैं जिसके 1,500 से ज्यादा सब्सक्राइबर्स हैं, और हर वीडियो पर 2.5 लाख से अधिक व्यूज होते हैं। यह चैनल उन छात्रों की मदद के लिए बनाया गया है, जिन्हें बार-बार पढ़ाने की आवश्यकता होती है, और उन ज़िला परिषद स्कूल के शिक्षकों के लिए भी, जो अध्यापन के नए तरीकों की तलाश में हैं। OLF से बातचीत के दौरान वह भारतभर के ज़िला परिषद स्कूल के शिक्षकों के बीच ज्ञान आदान-प्रदान के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी देती हैं।

हमने डॉ प्रज्ञा सिंह से उनका अगले 5 वर्ष का लक्ष्य पूछा, तो कहती हैं: इन बच्चों को आजीवन पढ़ाते रहना ही मेरा लक्ष्य है।

शिक्षा का गढ़

गोगांव जिला परिषद शाला के शिक्षकों ने सीमित संसाधनों में ही अपनी स्कूल को गडचिरोली जिले के बच्चों के लिये शिक्षा का एक छोटा सा गढ़ बना लिया है।

गोगांव (गडचिरोली): कुल कक्षाएं 7। शिक्षक मात्र 5। स्कूल में खेल का मैदान नहीं। स्कूल की इमारत, परिसर आदि की स्थिति गंभीर। छात्रों की घटती संख्या। और स्पर्धा में अंग्रेजी स्कूलें, निराश शिक्षक, शिक्षा का गिरता स्तर...

लेकिन मुख्याध्यापिका उज्ज्वला खोब्रागड़े ने अगस्त 2021 में गोगांव जिला परिषद स्कूल में पदभार संभाला, तब उन्होंने देखा कि उनकी सहयोगी शिक्षिकाएं मालीनी कुडे, वनश्री जाधव, शालु मेटे, और सुधाकर भुते मेहनती थीं। उन्होंने स्थिति में सुधार करने की बात की, तब वे सारी उस योजना में उत्साह से शामिल हुईं। तब के जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी

अधिकारी ने बच्चों के लिए 'फुलोरा' उपक्रम शुरू करने का सुझाव दिया।

फिर क्या था। युद्ध स्तर पर काम शुरू हुआ। यह प्रयास धीरे-धीरे सामूहिक बनता गया। शालेय प्रबंधन समिति (SMC), ग्राम पंचायत, और कुछ शिक्षा प्रेमी ग्रामीणों ने दिल खोल के सहयोग किया। बाकी शिक्षा साहित्य के साथ साथ प्रत्येक कक्षा में डिजिटल टीवी और प्रोजेक्टर के माध्यम से विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी, और मराठी सरल करके पढ़ाया जाने लगा। शिक्षिकाएं रोज़ के स्कूल के बाद 1-2 घंटे बच्चों को कॉन्सेप्ट्स समझाने में मदद करती।

"इस अगस्त में 4 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। आज हमारे दूसरी-तीसरी कक्षा के बच्चे भी आसानी से अंग्रेजी पढ़ते हैं, स्पर्धाओं में भाषण दे सकते हैं; गणित में भी तेज़ हो रहे हैं। स्कॉलरशिप की परीक्षाओं में भी सफल हो रहे हैं," उज्ज्वलाजी गर्व से कहती हैं।

पर आज भी 7 वर्गों का भार 5 ही शिक्षिकाएं बड़ी बहादुरी से उठा रही हैं। क्योंकि विद्यार्थियों की संख्या अब दुगनी हो रही है। फिलहाल, उन्हें हिम्मत देने के लिए इतना ही काफी है। ■

महीनों के नाम

पहला माह जनवरी आई । नये साल व गणतंत्र दिवस लाई।।
दूसरा माह फरवरी आई । बसंत पंचमी का त्यौहार लाई ।।
तीसरा माह मार्च है आया । रामनवमी व होली का पर्व है लाया ।।
चौथा माह अप्रैल आया। परीक्षा व परिणाम ले आया।।
पांचवां माह मई आई । छुट्टी व भीषण गर्मी लाई ।।
छठवां माह जून है आया। नई कक्षा का उपहार है लाया ।
सातवां माह जुलाई आई । साथ में भारी बरसात लाई ।।
आठवां माह अगस्त आया । राखी व स्वतंत्रता दिवस लाया ।।
नवां माह सि तम्बर आया । शिक्षक दिवस का पर्व लाया ।।
दसवां माह अक्टूबर है आया । दीपावली का पर्व है आया ।।
ग्यारहवां माह नवम्बर आया ।
14 नवम्बर को बाल दिवस मनाया ।।
अंतिम माह दिसम्बर की बारी आई ।
क्रिसमस व शीतकालीन की खुशियां लाई ।।
इस तरह साल की हुई बिदाई ।

पोषण कुमार मारकण्डे
पूर्व माध्यमिक शाला डुमरीडीह, विकासखंड – दुर्ग

बिरसा मुंडा

(९ अगस्त 'आदिवासी दिन' के अवसर पर लिखी बिरसा मुंडा पर यह रचना)

"पुन्हा बिरसा जन्म घेरे
करण्या आमचे रक्षण"
सृष्टी निर्मितीचे पूर्वज आम्ही
आदिवासी आमची जमात
रानमेवा खातच वाढलो
पशु पक्षी मित्र आमचे रानात ।।1।।

मोलमजुरी व्यवसाय आमचा
निसर्ग आमची देवता
बिरसा मुंडा जननायक आमचा
त्यानेच शिकवली खरी मानवता ।।2।।

पारतंत्र्यात शोषणा विरुद्ध
लढला तो बनावान
वन कायद्याला तिलांजली देत
इंग्रजांविरुद्ध पेटवले रान ||3||

हजारीबागच्या तुरुंगात त्याने
केला एक संकल्प
इंग्रज सरकार उलथून पाडण्यासाठी
उलगुलानचा दिला आम्हा विकल्प ।।4।।

ब्रिटीश आणि जहागीराविरुद्ध
बिरसा तू पुकारालेस बंड
शोषणा विरुद्ध लढण्याचे बळ देऊन
सर्वांना सोबत घेत
लढत राहिला अखंड ।।5।।

मानवाच्या अतिक्रमणाने जंगल
डोंगर झाले माळरान
सिमेंटच्या जंगलात बुडून मानव
विसरत चालला जगण्याचे भान ।।6।।

आज स्वातंत्र्याचे शतक गाठतोय
तरीही होतच आहे आमचे शोषण
पुन्हा बिरसा जन्म घेरे
करण्या आमचे रक्षण ।।7।।

- श्री. प्रकाश लोटन चव्हाण
प्राथमिक शिक्षक,
जि. प. शाळा-करंजवण
ता. दिंडोरी जि. नाशिक
मोबा.9960125981

पढ़ाई का जुगाड़

शिल्पा चव्हाण ने न केवल अपने जिले की सबसे अच्छी गणित की शिक्षिका होने का सम्मान पाया है, बल्कि नवरी एक्टिविटीज ग्रुप इंडिया का नेशनल इनोवेटिव एजुकेशन रत्न अवार्ड और पिछले साल का मुख्यमंत्री शिक्षादूत अवार्ड भी पाया है।

गीदम (दंतेवाड़ा): जुगाड़ प्रोजेक्ट्स, बेकार चीजों से पढ़ाई का सामान बनाना, और व्यावहारिक उपक्रमों के माध्यम से गणित को आसान बनाना...

ये सब कार्य दंतेवाड़ा जिले के सोनारपारा प्राथमिक शाला की प्रधानाचार्या शिल्पा चव्हाण द्वारा किए गए हैं। उनके इन सरल पर प्रभावी प्रोजेक्ट्स और गणित अध्यापन में किए गए कार्यों ने उन्हें जिले के बेहतरीन शिक्षकों में स्थान दिलाया है।

शिक्षिका के रूप में उनका नवाचार और समर्पण तभी स्पष्ट हुआ जब 2007 में वे अपने करियर की पहली ही नौकरी करने रेंगनार विद्यालय में दाखिल हुई। इस आदिवासी इलाके में अपने छात्रों से प्रभावी रूप से जुड़ने के लिए, बड़ी मेहनत से, उन्होंने छात्रोंकी मातृभाषा गोंडी सीख ली। 2009 में उनका स्थानांतरण बाल प्राथमिक शाला, गीदम, में हुआ, जहां उन्होंने 13 वर्षों में कई अभिनव उपक्रम साकार किये। उन्होंने वहाँ के बच्चों की भाषा हल्बी सीखकर गीतों, कहानियों, नृत्यों, और खेलों के माध्यम से पढ़ाई को मज़ेदार बना दिया।

शिल्पा जी का मानना है कि बुनियादी शिक्षा न्यूनतम संसाधनों के साथ भी संभव है। अपनी यह बात साबित करने के लिये वह शिक्षा मेलों का आयोजन भी करती हैं। कोविड-19 के दौरान भी, उन्होंने ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से छात्रों को पढ़ाई से जोड़े रखा। उनके छात्र अब अच्छे विद्यालयों में चयनित हो रहे हैं।

2023 में, उन्हें गीदम के ही सोनारपारा प्राथमिक शाला की प्रधानाचार्या के रूप में पदोन्नत किया गया। उनके कई पूर्व छात्र आज भी उनकी सलाह लेने आते हैं, जो उनके वर्षों के समर्पण को दर्शाता है, और उतना ही बच्चों का उनके प्रति प्रेम भी।

हालांकि,यह प्रशंसा उनके सर नहीं चढ़ती। "विद्यार्थी पढ़कर बढ़ते रहेंगे, पुरस्कार भी अपनी जगह हैं, पर बच्चों को पढ़ाकर उनकी ज़िंदगी में रौशनी लाना यह कार्य चलते रहना चाहिए," वे कहती हैं। यह कार्य चलाते रहना ही उनकी मंज़िल है। इसलिए जब हम उनसे मिलने गए, तब उनके पास हमें अपनी उपलब्धियां गिनाने का समय नहीं था। क्योंकि वे तब भी व्यस्त थीं, बच्चों के लिए नए जुगाड़ प्रोजेक्ट्स की योजना बनाने में। ■

महावचन उत्सव 2024

पुणे: शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, राज्य के सभी प्रबंधन स्कूलों में 22 जुलाई से 30 अगस्त तक 'महावचन उत्सव 2024' का आयोजन किया जाएगा।

इस अभियान के ब्रांड एंबेसडर के रूप में प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन को चुना गया है। 22 नवंबर 2023 को राज्य के सभी स्कूलों में 'वाचन अभियान' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया था, जिसमें 66,000 से अधिक स्कूलों और 52 लाख छात्रों ने सक्रिय भागीदारी की। यह कार्यक्रम रीड इंडिया सेलिब्रेशन के सहयोग से संपन्न हुआ। इसी सफलता के आधार पर, शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में भी 'महावचन उत्सव' को लागू करने का निर्णय लिया गया।

इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों में पढ़ने की रुचि विकसित करना, उन्हें मराठी भाषा, साहित्य और संस्कृति से जोड़ना तथा उनकी रचनात्मकता और भाषा संचार कौशल को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही, यह उत्सव गुणवत्तापूर्ण साहित्य और प्रतिष्ठित लेखकों को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करना है।

राज्य के शिक्षा क्षेत्र में इस वर्ष के अब तक के कुछ प्रमुख घटनाक्रम:

1. विदेशी स्कूलों में मराठी पाठ्यक्रम का विस्तार: ब्रिहान महाराष्ट्र मंडल ऑफ अमेरिका (BMM) ने महाराष्ट्र राज्य शिक्षा बोर्ड के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत महाराष्ट्र राज्य का पाठ्यक्रम संयुक्त राज्य अमेरिका के 80 स्कूलों में शामिल किया जाएगा, जहाँ मराठी भाषा सिखाई जाती है।

2. राज्य पाठ्यक्रम रूपरेखा (SCF): राज्य शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (SCERT) ने एक नया राज्य पाठ्यक्रम रूपरेखा जारी किया है, जिसमें बहुभाषी शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षण विधियों को प्राथमिकता दी गई है। इस रूपरेखा के तहत छात्रों को दो भारतीय भाषाएँ और एक विदेशी भाषा पढ़ाई जाएगी।

इनके अलावा, राज्य के शिक्षा क्षेत्र में और भी कई सुधार और पहलें चल रही हैं, जिनका उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाना और छात्रों के लिए विविध और समृद्ध शैक्षिक अवसर प्रदान करना है।

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग का कोटा निजी स्कूलों में अनिवार्य: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को बॉम्बे हाई कोर्ट के उस आदेश को बरकरार रखा, जिसमें महाराष्ट्र सरकार की 9 फरवरी की अधिसूचना को रद्द कर दिया गया था। इस अधिसूचना में उन निजी स्कूलों को छूट दी गई थी, जो एक किलोमीटर के दायरे में किसी सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल के पास स्थित हैं, कि उन्हें प्रारंभिक कक्षाओं में गरीब छात्रों को प्रवेश देने के लिए 25% सीटें आरक्षित नहीं रखनी होंगी, जैसा कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत निर्धारित है। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और जस्टिस जे बी पारदीवाला तथा मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि गरीब बच्चों को अच्छे निजी स्कूलों में प्रवेश पाने का कानूनी अधिकार है। "हम उन्हें सरकारी स्कूलों तक सीमित क्यों रखें और अच्छे निजी स्कूलों में प्रवेश पाने से वंचित क्यों करें?"

मुख्य न्यायाधीश ने कहा, "यह उन बच्चों के लिए भी अच्छा दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिनके माता-पिता संसाधनों से सम्पन्न हैं और जो वहां पढ़ते हैं। वे गरीब बच्चों के साथ बातचीत करते हैं और समझते हैं कि असल भारत क्या है। अन्यथा, वे केवल फैंसी गैजेट्स और अपने ही दुनिया में सीमित रह जाते हैं। यह बातचीत उन्हें अच्छे नेता बनने में मदद कर सकती है।"

दैनिक भास्कर

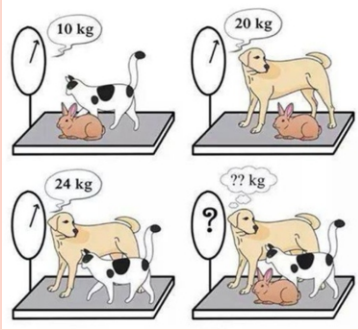

7 JULY 2024

सीएम ने आठ उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया

शिक्षकों का आत्म-सम्मान बढ़ाने के लिए यह पेशा आकर्षक बनाना जरूरी है। उनके अच्छे काम की सराहना होनी चाहिए, ताकि उन्हें यकीन हो कि अच्छे काम की कद्र होती है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने हाल ही में धमतरी जिले के 5 शिक्षकों को "पोस्ट ऑफ द मंथ" पुरस्कार प्रदान किया। इसके अलावा, महाराष्ट्र SCERT की नेहा बेलसरे ने शिक्षा प्रक्रिया में उत्कृष्ट प्रयोगों के लिए 5 शिक्षकों को सराहा। आईएएस अधिकारी, जिला प्राधिकरण, ब्लॉक स्तर के अधिकारी, साथ ही स्थानीय सांसद और विधायक, शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए एक साथ आए। कई शिक्षकों भावुक हो उठे, क्यूंकी ये क्षण उनके 10-30 वर्षों की निरंतर सेवा की अभिस्वीकृति थी।

कर्मचारियों को उनकी पूरी क्षमता से काम करने के लिए प्रेरित करना सफल प्रबंधन का मुख्य नियम है। मान्यता - वह भी समय पर, वस्तुनिष्ठ और पारदर्शी होनी चाहिए। विनोबा कार्यक्रम सरकारी जिला परिषद स्कूलों में शिक्षक मान्यता के लिए उपकरण और मंच प्रदान करता है।

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF)
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**